08 / 07 / 74 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

मास्टर नॉलेजफुल व मास्टर सर्व-शक्तिवान् बन
विभिन्न प्रकार की क्यू से मुक्त होने का अनुभव

➢➢ संगमयुग का मिलन मेला..

➼ _ ➼ मैं आत्मा इस कल्याणकारी संगमयुग में परमात्मा से मिलन मनाने पहुँच जाती हूँ... मधुबन डायमंड हाल...

→ जहाँ चारों ओर सफ़ेद पोश फ़रिश्ते नजर आ रहे हैं...

■ अपने पिता से मिलने की चाह में अपनी आँखें बिछाये बैठे हुए हैं...

▶ मैं आत्मा भी अपनी पलकों को बिछाये बाबा की राह देखती हूँ...

➼ _ ➼ थोड़ी ही देर में अव्यक्त बापदादा गुलजार दादी के तन में प्रवेश करते हैं...

→ अव्यक्त बापदादा चारों ओर के बच्चों को अपनी दृष्टि से निहाल कर रहे हैं...

■ मैं आत्मा बाबा की दृष्टी से निकलती अलौकिक किरणों को स्वयं में ग्रहण कर रही हूँ...

■ सभी आत्माएं बाबा की दृष्टि से तृप्त हो रही हैं...

➼ _ ➼ कितने जन्मों से दर-दर भटकती सभी आत्माएं अपने सामने भगवान को देख आनंदित हो रही हैं...

→ जिसके एक दर्शन के लिए मंदिरों, मस्जिदों, तीर्थों पर धक्के खा रहे थे...

→ जिसको पाने के लिए ना जाने कितने व्रत, उपवास, हवन, पूजन किए...

→ जिसके प्यार की एक बूँद के प्यासे थे...

■ वो प्यार का सागर साक्षात् सामने बैठा हुआ है...

→ और सर्व खजाने अपने बच्चों पर लुटा रहा है...

→ यही बाप और बच्चों का असली अलौकिक मिलन मेला है...

➢➢ एक से सर्व-सम्बन्धों और सर्व प्राप्तियों का अनुभव..

➼ _ ➼ मैं आत्मा डायमंड हाल में बाबा से दृष्टि लेते हुए इस देह से न्यारी हो जाती हूँ...

→ सूक्ष्म शरीर धारण कर बापदादा के साथ सूक्ष्म वतन पहुँच जाती हूँ...

➼ _ ➼ मैं आत्मा बाबा से मात-पिता का अनुभव कर रही हूँ...

→ मैं आत्मा बाबा को अपने मात-पिता के रूप में देख रही हूँ...

→ ब्रह्मा तन में अवतरित होकर मुझे अपनी गोद में लेकर...

→ सर्वश्रेष्ठ पालना दे रहे हैं...

■ अमृतवेले मुझे रोज जगाने आते हैं...

▶ अपने प्यार से मुझे भरपूर करते हैं...

▶ अपनी वर्से का अधिकारी बना रहे हैं...

➽ _ ➽ बाबा शिक्षक के रूप में रोज मुझे पढ़ाने आते हैं...

→ सुप्रीम शिक्षक मुझे राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं...

→ रोज मीठी-मीठी मुरली सुनाते हैं...

→ मुझे राजाओं का राजा बनाने की युक्तियाँ बताते हैं...

■ मैं आत्मा सुप्रीम शिक्षक से रोज ज्ञान के नए-नए प्वाइंट्स लेकर उन पर मंथन करती हूँ...

■ ज्ञान स्वरुप बन जीवन के हर परिस्थितियों में ज्ञान को यूज कर रही हूँ...

➽ _ ➽ मीठे बाबा सतगुरु के रूप में मुझे गति सद्गति दे रहे हैं...

→ सर्व वरदानों, गुणों और शक्तियों से मुझे गुणवान और मास्टर सर्व शक्तिवान बना रहे हैं...

■ मैं आत्मा दिव्य गुणों को धारण कर दिव्य गुणधारी बन रही हूँ...

■ धारणास्वरुप बन रही हूँ...

➽ _ ➽ प्यारे बाबा मुझे साजन के रूप में अविनाशी प्यार का अनुभव करा रहे हैं...

→ मैं आत्मा अविनाशी साजन को पाकर विनाशी संबंधों से मुक्त हो रही हूँ...

■ अविनाशी साजन के प्यार में लवलीन हो रही हूँ...

■ मेरे साजन मेरा अविनाशी श्रृंगार कर रहे हैं...

➽ _ ➽ स्वयं परमात्मा मेरे बच्चे के रूप में मुझे भरपूरता का अनुभव करा रहे हैं...

→ मैं आत्मा अपने शिव बच्चे को गोदी में लेती हूँ...

→ अपने हाथों से खाना खिला रही हूँ...

■ उसके संग खेल रही हूँ...

➽ _ ➽ मीठे बाबा खुदा दोस्त बन अविनाशी दोस्ती का अनुभव करा रहे हैं...

→ एक सच्चा दोस्त बनकर हर परिस्थिति में मेरा साथ निभा रहे हैं...

→ मुझे कभी अकेला नहीं छोड़ते हैं... हर पल मेरे साथ ही रहते हैं...

➽ _ ➽ मेरे प्यारे बाबा एक भाई बनकर मेरी रक्षा कर रहे हैं...

→ पवित्रता के सूत्र से अपने प्यार के बंधन में बाँध रहे हैं...

➢➢ मास्टर नॉलेजफुल व मास्टर सर्व-शक्तिवान् बन विभिन्न प्रकार की क्यू से मुक्त..

➽ _ ➽ मैं आत्मा एक बाबा से सर्व संबंधों और सर्व प्राप्तियों का अनुभव कर मास्टर नालेजफुल बन रही हूँ...

→ एक बाबा के प्यार के रस में लीन होकर लवलीन बन रही हूँ...

→ स्मृतिस्वरुप बन मास्टर नालेजफुल बन रही हूँ...

→ तीनों लोकों और तीनों कालों को देखने और जानने वाली त्रिकालदर्शी बन रही हूँ...

→ विनाशी देह और देहधारियों के लगाव से मुक्त होकर नष्टोमोहा बन रही हूँ...

➽ _ ➽ सर्व शक्तियों के सागर में डूबकर मैं आत्मा मास्टर सर्व शक्तिवान बन रही हूँ...

→ एक बाबा से मुझे सबकुछ मिल रहा है...

→ कुछ भी पाने के लिए कहीं और जाने की मुझे जरूरत ही नहीं है...

→ स्नेह, सहयोग, सर्व संबंधों का रस, सर्व गुण, खजाने, शक्तियां, सर्व प्राप्तियां सिर्फ और सिर्फ एक बाबा से अनुभव हो रही हैं...

➽ _ ➽ मैं आत्मा अब सर्व प्रकार के क्यू से मुक्त हो रही हूँ...

→ अब मैं आत्मा कोई भी अर्जी नहीं देती हूँ की...

■ मुझे शक्ति, सहयोग, हिम्मत दो...

▶ अब मैं आत्मा मास्टर नालेजफुल बन गई हूँ की ये सब मुझे मांगने की दरकार ही नहीं है...

▶ इन पर तो मेरा अधिकार है... और मैं इन्हें सहज प्राप्त कर सकती हूँ...

→ अब मैं आत्मा कोई भी कंप्लेंट नहीं करती हूँ...

→ कोई बीमारी समाप्त करने या सफलता के लिए कृपा या आशीर्वाद नहीं मांगती हूँ...

■ क्यों, क्या, कब के कम्पलेन्ट्स की क्यू समाप्त हो गई है...

■ व्यर्थ संकल्पों से मैं आत्मा मुक्त हो गई हूँ...

➽ _ ➽ मैं आत्मा सदा मास्टर नॉलेजफुल और मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्टेज पर स्थित रहती हूँ...

→ संकल्प, बोल और कर्म बाप समान बना रही हूँ...

→ मैं आत्मा सदा एक बाबा के प्यार में मगन रहकर सर्व प्रकार के क्यू से मुक्त हो रही हूँ...

■ व्यर्थ के क्यू में समय बर्बाद करने के बजाय सदा मिलन मेले में बिजी रहती हूँ...